"कैलाश-प्रकरण"

संभ चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा ॥

बहु लालसा कथापर बाढ़ी।
नयनन्हि*नीरु रोमावलि ठाढ़ी॥ ⟨१०३ (२)
प्रेम बिबस मुख आव न बानी।
दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी॥ ⟨१०३ (३)

"लालसा"—उत्कट इच्छा, बहुत बड़ी अभिलाषा या चाह, उत्सुकता। "रोमावली"—रोंगटे, रोयों (रोमों) की पंक्ति। = रोयोंकी पंक्ति जो पेटके बीचोंबीच नाभिसे ऊपरको ओर गई होती है' (श० सा०)॥

अर्थः—कथा सुनने की लालसा बहुत बढ़ी, नेत्रोंमें जल भर आया, रोमावली खड़ी होगई, प्रेमसे बेबस होगए, मुख में वाणी नहीं आती अर्थात् बोल नहीं पाते, यह दशा देखकर ज्ञानी मुनि श्रीयाज्ञवल्क्यजी प्रसन्न हुए।

"अति सुख पावा":— पं० रामकुमारजी कहते हैं कि अच्छे वक्ताओंकी वाणी सुनकर सबको सुख हुआ है, जैसे अगस्तजीके वचन सुनकर शिवजीको, यथा—'राम कथा मुनिबर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखमानी' (⟨ ४७)॥ श्रीरामचन्द्रजीके बचन सुनकर लक्ष्मणजीको, यथा—"भगति जोग सुनि अति सुखपावा। लछिमन प्रभु चरनन्हि सिरु-नावा"॥(अ०⟨१८)॥ शिवजीके बचनसुनके पार्वतीजीको, यथा—'हरि चरित्र मानस तुम्ह गावा। सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥(उ०⟨५२)॥' और श्रीभुशुण्डजीके वचन सुनके गरुड़जी को, यथा—'नयन नीर मन अति हरषाना। श्रीरघुपति प्रताप

*पाठान्तर —नयन (ना० प्र०)